CHETANA
International Journal of Education
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2022 = 6.261
आलेख
Received 20.11.2022 Reviewed 25.11.2022 Accepted 10.12.2022

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्याालयों तथा अकादमिक महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में निराशा, सांवेगिक परिपक्वता तथा जीवन संतुष्टि का अध्ययन

*ममता कामरा
**डॉ.रितु बाला

सारांश

*प्रस्तुत शोधकार्य में **शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्याालयों तथा अकादमिक महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में निराशा, सांवेगिक परिपक्वता तथा जीवन संतुष्टि का अध्ययन** किया गया हैं। अध्ययन में प्राप्त आंकडों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किये गए है। यह अध्ययन राजस्थान के श्रीगंगानगर व हनुमानगढ जिले के विधार्थियों पर किया गया है। इस हेतु **निराशा स्तर मापनी डॉ. एन. एस. चौहान और डॉ. गोविंद तिवारी सावेंगिक परिपक्वता मापनी डॉ. यशवीर सिंह तथा डॉ. महेश भार्गव ,जीवन संतुष्टि मापनी डॉ. क्यू. जी आलम तथा डॉ. राम जी श्रीवास्तव** का उपयोग किया गया है। निष्कर्ष रूप में पाया गया कि शिक्षण प्रशिक्षण व अकादमिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के निराशा स्तर में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अकादमिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों में निराशा का स्तर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक देखा गया जबकि सांवेगिक परिपक्वता,जीवन संतुष्टि स्तर में सार्थक अन्तर नहीं देखा गया.*

प्रस्तावना

शिक्षा समाज का प्रतिबिम्ब है। बच्चों के विकास में किसी की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा ही वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य सब प्रकार से विकसित होकर समाज में उपयुक्त स्थान ग्रहण करता है। शिक्षा के माध्यम से ही मानव जाति द्वारा अर्जित सहस्त्रों वर्षों के अनुभव बालक को हस्तातरित कर दिए जाते है। शिक्षा के माध्यम से ही वह अपने समाज की संस्कृति को ग्रहण करता है और उसका शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यत्मिक विकास होता है।बालक का मन अनेक प्रकार की सम्भावनाएँ लेकर दुनिया में आता हैं और उसके विकास की सीमाएँ बहुत विस्तृत और विशाल होती है। उचित और अनुकूल सुविधाएँ मिलने पर व्यक्ति उँचे से उँचे विकास तक पहुँच सकता है। उसे कोई भी रूप दिया जा सकता है। अंग्रेज दार्शनिक लॉक का मानना था कि ''बालक का मन एक स्वच्छ कोरी स्लेट की तरह है जिस पर अनुभव द्वारा संस्कार अंकित होते है।''

आधुनिक समाज की नीवं प्रतियोगिता पर टिकी हुई है जो सफल हैं। वह आगे की दौड में शामिल हो जाता है तथा जो असफल हो वह पीछे रह जाता है। इसमें महत्वपूर्ण भूमिका विद्यार्थी स्तर की मानी जाती है। वर्तमान सभ्यता वं सस्कृति अल्प समय में प्रभावों का परिणाम नही है अपितु इस स्तर पर पहुचने के लिए उसे बहुत संधर्ष करना पडता है।मनुष्य को जीवन में अनेक परिस्थितियों का सामना करना पडता है मनुष्य जीवन में अनेक प्रकार की समस्याओं से जुझता रहता है। यदि वह इन समस्याओं का सामना नही करेगा तो वह हमेंशा दुखी रहेगा और परिस्थितियों से अनुकूलन के अभाव में उसका जीवन तनावग्रस्त रहेगा वह जीवन का आनंद नही उठा पायेगा सफल एवं समायोजित जीवन के लिए समस्याओं को सुलझाना एवं सफलता प्राप्त करना अनिवार्य है। असफलता अनेक प्रकार की चिन्ताओं या निराशाओं को जन्म देती है ओर उपलब्धि में बाधक बनती है। इन बाधाओं के कारण

व्यक्ति जो कुछ करना चाहता है, वह नहीं कर पाता है। सीमा के अन्दर निराशा प्रेरणादयक होती है सीमा पार होने पर यही निराशा हानिकारण बन जाती है। निराशा को प्रायः एक रूकावट समझा जाता है। एक व्यक्ति जो निराशा से पीडित होता है। किसी कार्य को करने में पूर्ण शक्ति का प्रयोग नहीं कर सकता।इस प्रकार विचार किया जाता है कि निराशा क्रिया में रूकावट डालती है और सीखने की गति में कमी आ जाती है।

यद्यपि वर्तमान स्तर से मनुष्य ने समय और स्थान को काफी हद तक जीत लिया है। लेकिन मानसिक स्तर पर वैज्ञानिक उन्नति फिर भी उसके आसितत्व पर बहुत खतरा है। विशेष रूप से महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों में अशांति, चिंता और जीवन के सभी क्षेत्रों में निराशाएँ रही है। निराशाओ का कारण कहीं न कहीं स्वंय के संवेगो पर नियन्त्रण न होना है जिस कारण वह अपने जीवन में निराश व असंतुष्ट महसूस करने लगते है और धीरे धीरे अपने जीवन की खुशियों से दूर जाने लग जाते है। प्रस्तुत शोध के माध्यम से शोधार्थी इस गहन समस्या पर रोशनी डालने का प्रयास कर रही है कि यह मनोवैज्ञानिक समस्या किस प्रकार हमारे जीवन के विभिन्न पक्षों पर प्रभाव डाल रही है और इस समस्या से किस प्रकार बचाव किया जा सकता है।

समस्या कथन

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्याालयों तथा अकादमिक महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में निराशा, सांवेगिक परिपक्वता तथा जीवन संतुष्टि का अध्ययन

शोध शीर्षक में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

निराशा रोजेनविंग (1941 के अनुसार –'' जब जीव की जीवन सम्बन्धी आवश्यकताओं की संतुष्टि में कुछ या अनेक अविजित बाधाएँ उत्पत्र होती है, तब उसमें निराशा उत्पत्र होती है।''

संवेगात्मक परिपक्वता संवेगात्मक परिपक्वता को इस रूप में देखा जाता है कि आप परिस्थितयों का जवाब देने में कितना सक्षम है, अपने संवेगो को नियंत्रित करे और दूसरों के साथ व्यवहार करते समय व्यस्क तरीके से व्यवहार करें।

जीवन सन्तुष्टि व्यूटेल (2006) के अनुसार '' जीवन संतुष्टि भावनाओं और व्यवहार के विषय में किसी व्यक्ति के जीवन की नकारात्मक से सकारात्मक को लेकर एक समय में किसी एक बिन्दू पर सम्पूर्ण आंकलन है।''[1]

अध्ययन के उद्देश्य

शिक्षक प्रशिक्षण महाविधालयों तथा अकादमिक महाविधालयों के विधार्थियों में निराशा सांवेगिक परिपक्वता तथा जीवन संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1 शिक्षक प्रशिक्षण महाविधालयों तथा अकादमिक महाविधालयों के विध्यार्थियों में निराशा स्तर में सार्थक अन्तर नही है ।

2 शिक्षक प्रशिक्षक महाविधालयों के छात्र तथा अकादमिक महाविधालयों के विधार्थियों मे सांवेगिक परिपक्वता स्तर में सार्थक अन्तर नही है।

3 शिक्षक प्रशिक्षक महाविधालयों के छात्र तथा अकादमिक महाविधालयों के विधार्थियों मे जीवन संतुष्टि स्तर में सार्थक अन्तर नही है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में हनुमानगढ व गंगानगर जिले की कुल 600 विधार्थियों का चयन किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

[1] [1] www.shodh ganga.com

निराशा स्तर मापनी **डॉ. एन. एस. चौहान और डॉ. गोविंद तिवारी**

सावेंगिक परिपक्वता मापनी **डॉ. यशवीर सिंह तथा डॉ. महेश भार्गव**

जीवन संतुष्टि मापनी **डॉ. क्यू. जी आलम तथा डॉ. राम जी श्रीवास्तव**

प्रदत्तों का विश्लेषण व विवेचन

1 शिक्षक प्रशिक्षण महाविधालयों तथा अकादमिक महाविधालयों के विध्यार्थियों में निराशा स्तर में सार्थक अन्तर नही है ।

महाविद्यालय	विधार्थी संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी प्राप्तांक	0.05 स्तर	0.01स्तर
शिक्षण–प्रशिक्षण	300	112.73	33.71		(1.96)	(2.59)
अकादमिक	300	125.97	35.95	4.71	अस्वीकृत	अस्वीकृत

N1+N2-2=300+300-2=598

परिकल्पना संख्या 1 में शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों तथा अकादमिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के निराशा स्तर का अध्ययन किया गया है। इस परिकल्पना के विश्लेषण हेतु सर्वप्रथम 300 शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के विद्यार्थियों से निराशा मापनी को भरवाया तथा प्राप्त दत्तों का सांख्यिकी प्रविधियों की सहायता से मध्यमान,मानक विचलन निकाला गया जो कि क्रमशः112.73 तथा 33.71 प्राप्त हुआ इसी प्रकार अकादमिक महाविद्यालयों विद्यार्थियों के निराशा स्तर मापनी के आंकडों का मध्यमान 125.99 तथा मानक विचलनों 35.95 के आधार पर टी प्राप्तांक की गणना की गई जो कि 4.71 प्राप्त हुआ।

गणनाकृत टी प्राप्तांक की तुलना टी सारणी में स्वातन्त्रता के अंश 598 के सार्थकता के स्तर 0.05 तथा 0.01 (2.59) से की गयी जिससें ज्ञात हुआ कि हमारे द्वारा गणनाकृत मान दोनों स्तरों के मान से अधिक है। अतः हमारे द्वारा निर्मित परिकल्पना संख्या 1 '' शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालयों तथा अकादमिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के निराशा स्तर में सार्थक अन्तर नही है।'' अस्वीकृत हो जाती है।

2.शिक्षक प्रशिक्षक महाविधालयों के छात्र तथा अकादमिक महाविधालयों के विधार्थियों मे सांवेगिक परिपक्वता स्तर में सार्थक अन्तर नही है।

महाविद्यालय	विधार्थी संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी प्राप्तांक	0.05 स्तर (1.96)	0.01स्तर (2.59)
शिक्षण–प्रशिक्षण	300	101.72	37.54			
अकादमिक	300	105.20	37.74	1.13	स्वीकृत	स्वीकृत

N1+N2-2=300+300-2=598

परिकल्पना संख्या 2 में शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों तथा अकादमिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के सांवेगिक परिपक्वता स्तर का अध्ययन किया गया है। इस परिकल्पना के विश्लेषण हेतु सर्वप्रथम 300 शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के विद्यार्थियों से सांवेगिक परिपक्वता मापनी को भरवाया तथा प्राप्त दत्तों का सांख्यिकी प्रविधियों की सहायता से मध्यमान,मानक विचलन निकाला गया जो कि क्रमशः101.72 तथा 37.54 प्राप्त हुआ इसी प्रकार अकादमिक महाविद्यालयों विद्यार्थियों के सांवेगिक परिपक्वता मापनी के आंकडों का मध्यमान 105.20 तथा मानक विचलनों 37.74 के आधार पर टी प्राप्तांक की गणना की गई जो कि 1.13 प्राप्त हुआ। गणनाकृत टी प्राप्तांक की तुलना टी सारणी में स्वातन्त्रता के अंश 598 के सार्थकता के स्तर 0.05 तथा 0.01 (2.59) से की गयी जिससें ज्ञात हुआ कि हमारे द्वारा गणनाकृत मान दोनों स्तरों के मान से कम है। अतः हमारे द्वारा निर्मित परिकल्पना संख्या 2 '' शिक्षण प्रशिक्षण

महाविद्यालयों तथा अकादमिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के सांवेगिक परिपक्वता स्तर में सार्थक अन्तर नही है।'' स्वीकृत हो जाती है।

3. शिक्षक प्रशिक्षक महाविधालयों के तथा अकादमिक महाविधालयों के विधार्थियों मे जीवन संतुष्टि स्तर में सार्थक अन्तर नही है ।

महाविद्यालय	विधार्थी संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी प्राप्तांक	0.05 स्तर (1.96)	0.01स्तर (2.59)
शिक्षण–प्रशिक्षण	300	36.31	11.95			
अकादमिक	300	37.53	12.21	1.23	स्वीकृत	स्वीकृत

N1+N2-2=300+300-2=598

परिकल्पना संख्या 3 में शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों तथा अकादमिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के जीवन संतुष्टि स्तर का अध्ययन किया गया है। इस परिकल्पना के विश्लेषण हेतु सर्वप्रथम 300 शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के विद्यार्थियों से जीवन संतुष्टि मापनी को भरवाया तथा प्राप्त दत्तों का सांखयिकी प्रविधियों की सहायता से मध्यमान,मानक विचलन निकाला गया जो कि क्रमशः36.31 तथा 11.95 प्राप्त हुआ इसी प्रकार अकादमिक महाविद्यालयों विद्यार्थियों के जीवन संतुष्टि मापनी के आंकडों का मध्यमान 37.20 तथा मानक विचलनों 12.21 के आधार पर टी प्राप्तांक की गणना की गई जो कि 1.13 प्राप्त हुआ।

गणनाकृत टी प्राप्तांक की तुलना टी सारणी में स्वातन्त्रता के अंश 598 के सार्थकता के स्तर 0.05 तथा 0.01 (2.59) से की गयी जिससें ज्ञात हुआ कि हमारे द्वारा गणनाकृत मान दोनों स्तरों के मान से कम है। अतः हमारे द्वारा निर्मित परिकल्पना संख्या 3 '' शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालयों तथा अकादमिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के जीवन संतुष्टि स्तर में सार्थक अन्तर नही है।'' स्वीकृत हो जाती है।

निष्कर्ष :–1 शिक्षक प्रशिक्षण महाविधालयों तथा अकादमिक महाविधालयों के विध्यार्थियों में निराशा स्तर में सार्थक अन्तर नही है ।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि शिक्षण प्रशिक्षण व अकादमिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के निराशा स्तर में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अकादमिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों में निराशा का स्तर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक देखा गया।

2 शिक्षक प्रशिक्षक महाविधालयों के छात्र तथा अकादमिक महाविधालयों के विधार्थियों मे सांवेगिक परिपक्वता स्तर में सार्थक अन्तर नही हैं ।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि शिक्षण प्रशिक्षण व अकादमिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के सांवेगिक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। अकादमिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों में सांवेगिक परिपक्वता का स्तर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के समान ही देखा गया।

3 शिक्षक प्रशिक्षक महाविधालयों के छात्र तथा अकादमिक महाविधालयों के विधार्थियों मे जीवन संतुष्टि स्तर में सार्थक अन्तर नही है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि शिक्षण प्रशिक्षण व अकादमिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के जीवन संतुष्टि स्तर में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। अकादमिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों में जीवन संतुष्टि का स्तर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के समान ही देखा गया।

भावी शोध हेतु सुझााव

1.शोध कार्य के लिये न्यादर्श अधिक विस्तृत लिया जा सकता है ताकि अध्ययन की विश्वसनीयता अधिक हो सके।

2. प्रस्तुत शोध कार्य व्यावसायिक महाविद्यालयों के प्रशिक्षार्थियों व अन्य क्षेत्रों से सम्बन्धित महाविद्यालयों पर भी लागू किया जा सकता है।

3. प्रस्तुत शोध कार्य गंगानगर, हनुमानगढ शहर के सीमित भौगोलिक क्षेत्र में किया गया है। इसे सम्पूर्ण राज्य स्तर पर किया जा सकता है।

4. किसी क्षेत्र के व्यावसायिक शिक्षा के प्रशिक्षार्थियों में निराशा के विभिन्न आयामों का तुलनात्मक अध्ययन न करके सभी क्षेत्रों के संचालन में भूमिका का अध्ययन करना चाहिए।

सन्दर्भ सूची

1. श्रीवास्तव, डॉ. डी.एन. वर्मा (2007) : ''बालमनोविज्ञान – बाल विकास संस्करण'' विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
2. शर्मा, आर. ए. (2005) : ''शिक्षा अनुसंधान'' सूर्या पब्लिकेशन्स, मेरठ
3. मंगल, डॉ. अंशु बरौलिया, डॉ. ए. अग्रवाल (2007): ''शैक्षिक अनुसंधान की विधियॉ एवं शैक्षिक सांख्यिकी'' राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा।
4. कपिल. एच.के. (2007) : ''अनुसंधान विधियॉ'' एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा।
5. कपिल, एच. के. : ''सांख्यिकी के मूल तत्व'' भार्गव बुक हाउस आगरा।
6- Andrew Sayer "Method in Social Science : A Realist Appoach" II Edition, London, New York,1997
7- Best, John W. & James V. Kahn " Research in Education" V Edition,New Delhi Prentice Hall of India Private Ltd. 1986
8- Good, Carter V. & Dougles B.S. "Methods of research : Education, Psychological & Sociological" New York (USA), Appleton Century.
9- Kerlinger , Fred N. "Foundation of Behavioral Research II Edition ,Delhi Surjeet Publication ,1983.

Corresponding Author
* ममता कामरा, शोधार्थी
**डॉ.रितु बाला, शोध निर्देशिका
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर
Email- drritubala77@gmail.com, Mob.-9461569991